

अध्ययन आदतों के विकास में मोबाइल की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. राजेश कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र

श्री बजरंग स्नातकोत्तर महाविद्यालय दादर आश्रम सिकंदरपुर बलिया

शोध सारांश

मोबाइल आज की शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ है। इसने शिक्षा व्यवस्था को सरल एवं सुलभ बनाया है। छात्र इसके माध्यम से ऑनलाइन कक्षाएं, ई-बुक्स, वीडियो लेक्चर एवं अनेक शैक्षिक एप्लीकेशन के प्रयोग द्वारा बेहतरीन अध्ययन सामग्री से अपने अध्ययन को और प्रभावी बना रहे हैं। मोबाइल के माध्यम से ही विभिन्न एप्लीकेशन गूगल क्लासरूम, जूम, गूगल मीट आदि के द्वारा विश्वव्यापी ऑनलाइन कक्षाएं संभव हुई हैं। इसमें छात्र न केवल विश्वस्तरीय ज्ञान प्राप्त कर रहा है, वरन अध्ययन आदतों के विकास में भी प्रभावी भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

इसके नकारात्मक पक्ष पर दृष्टिपात करें तो हम पाएंगे, कि मोबाइल के अनियंत्रित प्रयोग के कारण छात्र अनेक मानसिक, सामाजिक समस्याओं का सामना कर रहे हैं। समय की बर्बादी, अश्लील साहित्य आदि अनेक समस्याएं सीखने तथा व्यक्तित्व पर कुठाराघात कर रहे हैं।

अतः मोबाइल का प्रभाव उसके उपयोग पर निर्भर करता है। यदि छात्र मोबाइल का प्रयोग अपने लक्ष्य के अनुसार अनुशासन से करें तो अध्ययन आदतों का विकास अशंभवी है। इसका अनियंत्रित उपयोग न केवल अध्ययन में बाधा उत्पन्न करता है, वरन व्यक्तित्व विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

भूमिका

वर्तमान समय में मोबाइल व्यावहारिक जीवन की मात्र आवश्यकता ही नहीं है, वरन जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। दिन प्रतिदिन का एक बड़ा समय मोबाइल के प्रयोग में बीतता है। आज मोबाइल मात्र संचार का साधन ही नहीं है, वरन जीवन की प्रायः प्रत्येक गतिविधि मोबाइल से प्रभावित है। सूचना एवं संचार क्रांति ने हमारे सीखने के तौर तरीकों में व्यापक बदलाव किया है। परंपरागत साधनों यथा पुस्तकालय, वाचनालय, पुस्तकों की अतिरिक्त आज समस्त संसार सीखने का एक साधन बन गया है। गूगल के द्वारा आज पलक झपकते ही छात्रों की विभिन्न समस्याओं का समाधान हो जाता है। आज का छात्र परंपरागत कक्षाओं तक ही सीमित नहीं है। मोबाइल के माध्यम से ऑनलाइन कक्षाएं, ई बुक्स, वीडियो लेक्चर, यूट्यूब आदि अनेक ऐप उपलब्ध हैं, जिससे आज

मुख्य शब्द

अध्ययन

आदत

सीखने के मायने ही बदल गए है। इस शोध पत्र के माध्यम से अधिगम आदतों के विकास में मोबाइल के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है, कि मोबाइल सीखने को कैसे प्रभावित करता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

उपरोक्त शोध अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित है।

- 1-शिक्षा के क्षेत्र में मोबाइल के सदुपयोग एवं दुरुपयोग में सापेक्ष अंतर समझना।
- 2-स्वाध्याय में मोबाइल की भूमिका का मूल्यांकन करना।
- 3-अध्ययन आदतों पर मोबाइल की सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव का विश्लेषण करना।
- 4-एकाग्रता, चिंतन, मनन आदि मानसिक शक्तियों पर मोबाइल की प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की विधि

यह अध्ययन विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इसके अंतर्गत विभिन्न पुस्तकों, शोधपत्रों, विभिन्न वेबसाइटों एवं छात्रों के अनुभव एवं दैनिक गतिविधियों के आधार पर अध्ययन किया गया है।

अध्ययन आदतों के विकास में मोबाइल की सकारात्मक प्रभाव

वर्तमान परिपेक्ष में मोबाइल इंटरनेट की उपलब्धता के कारण संपूर्ण विश्व पुस्तकालय बन गया है। आज छात्र केवल परंपरागत कक्षा शिक्षक पर ही आश्रित नहीं है। छात्र मोबाइल के माध्यम से एक से बढ़कर एक शिक्षक की कक्षाएं ऑनलाइन माध्यम से ले सकता है। इसके अतिरिक्त विषय से संबंधित वीडियो देखकर अपनी शंकाओं का समाधान कर सकता है। मोबाइल के माध्यम से बेहतर से बेहतर नोट्स डाउनलोड कर सकता है, और उससे लाभान्वित हो सकता है। मोबाइल के माध्यम से न केवल सजीव कक्षाओं में छात्र पढ़ सकता है, वरन यह अपने समय के अनुसार सीखने का अवसर प्रदान करता है। खाली समय के सदुपयोग हेतु मोबाइल एक वरदान से काम नहीं है। इससे स्व अध्ययन की आदत का विकास होता है, तथा बड़ी से बड़ी जिज्ञासाओं की सहज समाधान होता है। छात्र मोबाइल के माध्यम से केवल विषय संबंधी ज्ञान ही प्राप्त नहीं करता है, वरन ऑनलाइन कक्षा, वीडियो आदि के माध्यम से सीखने पर उनमें तकनीकी संबंधी दक्षता का विकास भी होता है। मोबाइल के प्रयोग से आज छात्र आधुनिक तकनीकी युग में अपने को तकनीकी सक्षम बना रहा है। कोविड-19 के समय हम लोगों ने देखा कि जब संपूर्ण विश्व ठहर गया था, तब मोबाइल ही था, जिसने ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से छात्रों के होने वाले नुकसान की काफी हद तक भरपाई की थी, और अध्ययन आदतों की विकास में अपनी महती भूमिका का निर्वहन किया था। जनसंख्या के बढ़ते दबाव के कारण प्रत्येक छात्र को उसकी रुचि एवं योग्यता के अनुसार परंपरागत शिक्षा की व्यवस्था करना दुरुह कार्य है। यह मोबाइल ही है, जिसने दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से सर्व सुलभ शिक्षा के सपने को साकार किया है।

अध्ययन आदतों के विकास में मोबाइल के नकारात्मक प्रभाव

सोशल मीडिया आज मनोरंजन का प्रमुख साधन बन गया है। छात्रों का दिन का एक बड़ा समय सोशल मीडिया के प्रयोग में बीतता है। यद्यपि सोशल मीडिया लोगों से जुड़ने तथा विभिन्न उपयोगी सूचनाओं की प्राप्ति का महत्वपूर्ण साधन है। परंतु अत्यधिक समय इस पर बर्बाद करना अपने छात्र जीवन पर कुठाराघात करना है। यह कहीं ना कहीं हमारा ध्यान पढ़ाई से भटकता है। सोशल मीडिया के साथ शॉर्ट वीडियो देखने का प्रचलन बहुत बढ़ गया है। इसमें लाइक्स पाने के लिए जो नग्नता परोसी जा रही है, वह समाज को दूषित कर रहा है। ये न केवल उच्च स्तर के छात्र वरन छोटी उम्र के छात्रों के व्यक्तित्व पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। कई छात्र न केवल शॉर्ट वीडियो देखने में एक बड़ा समय व्यतीत कर रहे हैं, वरन वीडियो बनाकर धनार्जन की होड़ मची हुई है। चाहे परोसे जाने वाली सामग्री का कोई सामाजिक, शैक्षिक मूल्य हो या ना हो, इसका कोई फर्क नहीं पड़ता है। ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों ने 16 वर्ष से कम उम्र के छात्रों के लिए सोशल मीडिया को प्रतिबंधित किया है। स्क्रीन टाइम की अधिकता के कारण आज छोटी उम्र से ही मोटे-मोटे चश्मा लगने लगे हैं। इसके साथ नींद की कमी, बेचैनी, मानसिक थकान, आंखों में जलन आदि समस्याएं आम हैं। लगातार मोबाइल देखने की लत के कारण एकाग्रता में भारी कमी आई है।

मोबाइल का प्रभावी उपयोग समाधान एवं सुझाव

मोबाइल आजीवन की अनिवार्य आवश्यकता है, परंतु उसके सदुपयोग एवं दुरुपयोग दोनों की संभावना है। मोबाइल छात्र को देव और दानव कुछ भी बन सकता है, वह इस पर निर्भर करता है कि, मोबाइल पर क्या विषय वस्तु देखी जा रही है। मोबाइल के प्रभावी उपयोग के लिए निम्नलिखित बिंदुओं का ध्यान रखा जाना चाहिए।

- 1-अध्ययन के समय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को पूर्णतः बंद रखें।
- 2-स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव के दृष्टिगत स्क्रीन टाइम सीमित रखें।
- 3-अनावश्यक एवं अनावश्यक एप्लीकेशन का उपयोग न करें। केवल शैक्षिक एप्स का उपयोग करें।
- 4-अध्ययन का टाइम टेबल बनाएं तथा ऑनलाइन अध्ययन के साथ-साथ पुस्तकों का अध्ययन भी करें।
- 5-सबसे महत्वपूर्ण है कि, अभिभावक अपने बच्चों पर नजर रखें जिससे छात्र मोबाइल का दुरुपयोग ना कर सके।
- 6-यूट्यूब आदि एप्लीकेशन की अश्लील सामग्री प्रदर्शन को ब्लॉक करके रखें।
- 7-विद्यालय में डिजिटल साक्षरता जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाए।
- 8-छात्रों को मोबाइल नैतिकता के विकास हेतु प्रेरित किया जाए।

निष्कर्ष

अध्ययन आदतों के विकास में मोबाइल के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव दोनों हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है, कि मोबाइल का प्रयोग छात्र किस उद्देश्य से करता है। यदि मोबाइल का प्रयोग अनुशासित ध्यान ज्ञान से किया जाए, तो यह अध्ययन आदतों की विकास में अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकता है। परंतु इसका दुरुपयोग न केवल अध्ययन में बाधा बन सकता है, वरन छात्र के व्यक्तित्व में अनेक प्रकारकी जटिलताओं के विकास का कारण भी बन सकता है।

अतः आज घर तथा विद्यालय में मोबाइल नैतिकता के विकास पर बल दिया जाना चाहिए। छात्रों को मोबाइल के संतुलित एवं उद्देश्य पूर्ण उपयोग की आदत सिखाई जाए।

संदर्भ

1-शिक्षा में नवाचार एवं नवीन प्रवृत्तियां अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा

2-www.hindilibraryindia.com

3-www.google.com

4-www.shodhganga.com

5-www.wikipedia.com

6-www.shodhgangotri.com



Contributors Details:

डॉ. राजेश कुमार